प्रथम विश्व युद्ध

प्रथम विश्वयुद्ध संधियों एवं प्रतिसंधियों का त्रासद परिणाम था। राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद एवं सैन्यीकरण की नीति ने प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर दी, जिसमें पारस्परिक संदेह एवं भय ने अपने ढंग से योगदान दिया।

अगर अनेक तथ्यों के बजाए सिर्फ़ फ्रैंकफर्ट की संधि को देखें तो प्रथम विश्व युद्ध के कारण इसी संधि में निहित थे। इस संधि के द्वारा जर्मनी ने फ्रांस से एल्सस एवं लोरेन का क्षेत्र छीन लिया। फ्रांस के लिए यह राष्ट्रीय अपमान की बात थी। बिस्मार्क इस बात से अवगत था कि फ्रांस कभी भी अपने इस राष्ट्रीय अपमान को धोने का प्रयास करेगा। अत: उसने फ्रांस को यूरोपीय मंच पर अलग-अलग कर देना चाहा ताकि भविष्य में भी फ्रांस प्रतिशोध लेने की स्थिति में न आ सके। बिस्मार्क की इसी चिंता ने संधि प्रणाली को जन्म दिया। उसने 1873 में तीन सम्राटों का संघ बनाया। इसमें जर्मनी, ऑस्ट्रीया एवं रूस के शासनाध्यक्ष शामिल थे। बिस्मार्क की सबसे बड़ी समस्या यह थी कि-रूस एवं ऑस्ट्रीया को एक मंच पर कैसे रखा जाए , क्योंकि बाल्कन क्षेत्र में दोनों के हित परस्पर टकरा रहे थे। जैसाकि हम जानते है 1878 के बर्लिन कांग्रेस में बिस्मार्क का झुकाव ऑस्ट्रीया की ओर हो गया और उसने ऑस्ट्रीया को बोस्निया एवं हर्जेगोविना पर संरक्षण दे दिया। स्वाभाविक रूप से रूसी भावना को ठेस लगी एवं जर्मनी की ओर से वह उदासीन हो गया। 1879 में जर्मनी एवं ऑस्ट्रीया के बीच संधि हुई; जिसके तहत अगर कोई तीसरी शक्ति एक पर आक्रमण करती है तो दूसरा उसकी सहायता करेगा।

अब बिस्मार्क का ध्यान इटली की ओर गया एवं वह इटली को मित्र मंडली में शामिल करना चाहा। किंतु इटली जर्मनी एवं फ्रांस के बीच विभाजित था। अत: बिस्मार्क को यह अवसर तब मिला जब फ्रांस ने ट्युनिशिया पर कब्जा कर लिया। इटली फ्रांस से नाराज होकर बिस्मार्क के खेमे में आ गया। अब 1882 में जर्मनी ऑस्ट्रीया एवं इटली के बीच त्रिगुट संधि हुई। दूसरी तरफ बिस्मार्क यह भी नहीं चाहता था कि रूस फ्रांस के खेमे में चला जाए। अत: उसने रूस के साथ 1887 में पुनर्आश्वासन की संधि की। किंतु 1888 के बाद जर्मनी के नए शासक विलियम द्वितीय ने बिस्मार्क की नीतियों को उलट दिया एवं रूस की अवहेलना करनी शुरू कर दी। निराश होकर 1890 में बिस्मार्क ने त्यागपत्र दे दिया।

दूसरी तरफ, जर्मनी की नीतियों के कारण रूस फ्रांस के नजदीक आता जा रहा था। फ्रांस ने रूस में पूंजी निवेश करना शुरू किया। अत: दोनों के हित परस्पर जुड़ने लगे। 1894 ई. में रूस एवं फ्रांस के बीच संधि हुई। अब इंग्लैंड अपने को अलग-थलग महसूस करने लगा था। दूसरी तरफ विलियम द्वितीय ने भी अपनी नीतियों के कारण इंग्लैंड को क्षुब्ध कर दिया। विलियम द्वितीय ने नौसेना के क्षेत्र में इंग्लैंड को चुनौती देनी शुरू कर दी थी। अत: इंग्लैंड फ्रांस के समीप आने लगा एवं 1904 में दोनों के बीच संधि हुई। अब रूस के साथ भी इंग्लैंड की संधि अनिवार्य हो गयी। फ्रांस एवं रूस आपस में मित्र थे परन्तु एशिया क्षेत्र में इंग्लैंड एवं रूस के हित टकराते थे। इंग्लैंड तिब्बत एवं अफगानिस्तान में अपना पाँव जमाना चाहता था।

Scanned with CamScanner

1905 में जापान से पराजित होने के बाद रूस इंग्लैंड की ओर देखा। उसने इंग्लैंड के प्रति अपनी दृष्टि परिवर्तित की। परिणामत: 1907 में फ्रांस - इंग्लैंड एवं रूस को मिलाकर Triple Entente का गठन हुआ।

इस तरह 20 वीं सदी के प्रथम दशक तक यूरोप में कूटनीतिक आंदोलन हो चुका था एवं यूरोपीय शक्तियाँ दो गुटों में बँट चुकी थीं। किंतु कुल मिलाकर यह गुट रक्षात्मक ही था। दोनों की शक्तियाँ लगभग बराबर थीं एवं दोनों में से कोई भी गुट युद्ध की ओर पहल करने हेतु तैयार न था। दोनों गुट इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि जो भी युद्ध होगा लंबा एवं विनाशक होगा एवं युद्धरत राष्ट्र को काफी धैर्य एवं सहनशक्ति की आवश्यता होगी। अत: दोनों ने अपनी विशिष्टता बनाए रखने के लिए सैन्यीकरण पर अत्यधिक बल देना शुरू कर दिया ताकि वह दूसरे गुट से ज्यादा शक्तिशाली हो जाए। अब इस सैन्यीकरण ने दो प्रकार के प्रभाव उत्पन्न किए।

- इसने यूरोपीय देशों में पारस्परिक भय एवं संदेह का वातावरण उत्पन्न किया।
- सैनिक नीतियों पर अत्यधिक बल देने के कारण धीरे-धीरे नीति निर्माण का कार्य सिविल अधिकारियों के हाथ से फिसलकर सैनिक अधिकारियों के हाथो में चला गया।

1871 के बाद हम यूरोपीय देशों में यह प्रवृत्ति देखते हैं। इसके साथ ही सैनिक महकमों में एक नई अवधारणा प्रचलित हो गई। वह यह कि अगर कोई शत्रु देश सैनिक दृष्टि से अपने को मजबूत बना रहा है तो उसके इस कार्यक्रम को पूरा होने से पहले ही उस पर आक्रमण किया जाना चाहिए।

सैन्यीकरण ने जर्मनी एवं इंग्लैंड के बीच विरोध पैदा कर दिया। आर्थिक एवं सैन्य सुधार के बाद जर्मनी एक यूरोपीय शक्ति के रूप में उभरा। दूसरी तरफ इंग्लैंड एक विश्व शक्ति था। इंग्लैंड की सैनिक शक्ति का आधार सक्षम नौसेना थी। बिस्मार्क इस कमजोरी को जानता था। अत: उसने उसे चुनौती नहीं दी थी। किंतु नए शासक विलियम कैसर ने बिस्मार्क की नीतियों को उलट दिया। वह इंग्लैंड को उन विशिष्टताओं से वंचित कर देना चाहता था, जिसकी बदौलत इंग्लैंड विश्व शक्ति बना था। स्वाभाविक रूप से इंग्लैंड एवं जर्मनी के बीच वैमनस्यता उत्पन्न हो गई। इस पारस्परिक वैमनस्यता को सर्वस्लाववादी एवं जर्मनवादी आंदोलनों ने और भी अधिक तूल दिया। सर्बिया के अधीन एक सर्वस्लाववादी आंदोलन शुरू हो गया जिसमें ऑस्ट्रीया का विघटन नजर आ रहा था। ऑस्ट्रीया ने 1908 में बोस्निया-हर्जेगोविना को अपने साम्राज्य में मिला लिया। स्वाभाविक रूप में सर्बिया को इस बात से आक्रोश हुआ क्योंकि उक्त क्षेत्रों में भी स्लाव जाति के लोग रहते थे। दूसरी तरफ सर्बिया को इस बात से रोष था। कि 1912-13 में बाल्कन युद्ध के पश्चात् ऑस्ट्रीया के संकेत पर अल्वानिया नामक नए राज्य का गठन कर दिया गया। फलत: सर्बिया की महत्वाकांक्षा पर अकुश लग गया। स्वाभाविक रूप से सर्बिया ऑस्ट्रीया के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में उभरा। दोनों के पारंस्परिक द्वेष ही सराजेवो हत्याकांड में प्रतिफलित हुआ जो प्रथम विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण बना।

सैन्यीकरण, राष्ट्रवाद एवं साम्राज्यवादी विचारधारा ने यूरोपीय मानसिकता को दूषित करने में प्रमुख भूमिका अदा की। तात्कालीक यूरोपीय नेताओं ने देश की जनता को गुमराह करने

Scanned with CamScanner

के लिए अपने शत्रु देश की सैनिक तैयारी को बढ़ा चढ़ा कर कहना शुरू किया। जैसाकि हम जानते है कि लगभग सभी शक्तियाँ सैनिक तैयारी में व्यस्त थ। वे सैनिक शक्ति पर अत्यधिक बल दे रही थीं। उन्हें अपने देश की संसद के सामने सैनिक तैयारी का औचित्य भी सिद्ध करना होता था। अत: वे संसद में गुमराह करने वाले बयान देने लगे। दूसरी तरफ जनमत को अपने पक्ष में करने के लिए समाचार पत्रों का भी सहारा लिया जाने लगा। इस तरह सभी देश अपने शत्रु देश की सैनिक तैयारी को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करने लगे। इस तथ्य ने यूरोपीय मानसिकता को बहुत हद तक दूषित कर दिया।

औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन को बढ़ाकर औद्योगिक देशों के उत्पादन की खपत के लिए बाजार की आवश्यकता को उजागर किया। साथ ही औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में काफी पूँजी इकट्ठी हो गई थी। अत: अतिरिक्त पूँजी के निवेश हेतु उपनिवेशों की आवश्यकता पुन: महसूस की गई। अत: 1870 के बाद एशिया एवं अफ्रीका का विभाजन प्रारंभ हुआ। किंतु नव उपनिवेशवाद (साम्राज्यवाद) ने प्रथम विश्व युद्ध को रोकने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वस्तुत: साम्राज्यवाद ने सुरक्षा कपाट का काम किया क्योंकि यूरोपीय शक्तियों की अतिरिक्त उर्जा साम्राज्यवादी विस्तार में क्षय होती रही और उनका ध्यान बँटता रहा था। परन्तु, 20 वीं सदी के प्रथम दशक तक एशिया एवं अफ्रीका के विभाजन का काम पूरा हो चुका था एवं विस्तार के लिए कोई नया क्षेत्र बचा ही नहीं था। अत: यूरोपीय शक्तियाँ यूरोप में जमा हो गईं थीं। स्वाभाविक रूप से इसने प्रथम विश्व युद्ध की भूमिका तैयार कर दी।

सैन्यवाद, उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद यूरोप के लिए कोई नई बात नहीं थी। अर्थात् 1914 से पहले ये सारे तत्व मौजूद थे। फिर भी विश्व युद्ध 1914 में शुरू हुआ; ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए की अब तक राजनीतिक दक्षता एवं कूटनीतिक उपायों के द्वारा समस्या का सामाधान ढूँढ़ लिया जाता था। किंतु 1914 से ठीक पहले एक विशेष बात यह हो गई कि यूरोप में कूटनीतिक प्रक्रिया (Break down of diplomatic channel) अवरूद्ध हो गई। अगर आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो यूरोप की स्थिति एक ऐसे विश्व की तरह हो गई जिसमें 'नाटो' एवं 'वार्सा पैक्ट' मौजूद हों परन्तु संयुक्त राष्ट्रसंघ अनुपस्थिति हो। इन्हीं परिस्थितियों ने प्रथम विश्व युद्ध को जन्म दिया।

क्या प्रथम विश्व युद्ध को टाला जा सकता था?

वस्तुत: प्रथम विश्व युद्ध के कारणों की जाँच करने पर हम पाते है कि कोई भी कारण इतना सशक्त नहीं था जो युद्ध को अनिवार्य बना देता। इससे पहले भी इनमें से बहुत कारक मौजूद थे किंतु युद्ध 1914 में ही हुआ। इसकी वजह थी कि संपूर्ण यूरोप में युद्ध की मानसिकता निर्मित हो चुकी थी। युद्ध का मनोविज्ञान इतना सशक्त हो गया था कि सभी प्रश्नों का एक मात्र निराकरण युद्ध ही दिखता था। जैसाकि कार्डिनल महोदय का मानना है कि राजा या राजकुमार का हत्याकाण्ड युद्ध का अनिवार्य कारण नहीं हो सकता है क्योंकि सराजेवो हत्याकाण्ड से पूर्व भी 1900 ई. में इटली के शासक तथा 1909 में पुर्तगाल के शासक की हत्या हो गई थी। अगर इस दृष्टि से देखा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि युद्ध को टाला जा सकता था।

Scanned with CamScanner

किंतु हम यह भी देखते है कि युद्ध का कारण शक्तियों के मौलिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक हितों की टकराहट थीं। अत: जिस किसी मुद्दे पर निहित आर्थिक, राजनीतिक हित एवं राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का प्रश्न उपस्थित होता एवं इसी मुद्दे के साथ युद्ध एवं शांति के विकल्पों का चुनाव का प्रश्न खड़ा होता तो यूरोपीय शक्तियाँ युद्ध को ही चुनने में तत्पर होतीं। अत: युद्ध अनिवार्य एवं अवश्यंभावी था। ईमानदार कोशिशों के बाद समय बढ़ाया जा सकता था, थोड़े समय के लिए इसे स्थगित किया जा सकता था किंतु अंतिम रूप से इसे टाला नहीं जा सकता था।

प्रभाव

राष्ट्रीय विचारधारा का प्रसार:

प्रथम विश्वयुद्ध के फलस्वरूप राष्ट्रवादी विचारधारा में एक बार फिर उभार आया। जहाँ वियना कांग्रेस का उद्देश्य राष्ट्रवादी भावना को कुचलना था वहीं पेरिस शांति सम्मेलन में राष्ट्रीयता की भावना पर बल दिया गया। राष्ट्रीयता की भावना के विकासस्वरूप स्टोनिया, लैटिविया, लिथुवानिया एवं फिनलैंड जैसे नए देशों ने जन्म लिया। दूसरी तरफ राष्ट्रवाद के उदय के परिणामस्वरूप चीन एवं तुर्की में आंदोलन शुरू हो गये। यह राष्ट्रवादी भावना का उछाह ही था कि मिस्र में राजनीतिक नेताओं को सफलता मिली। अब 1922 में इंग्लैंड को संरक्षण वापस लेना पड़ा। आयरलैंड में भी इंग्लैंड के विरूद्ध आंदोलन शुरू हो गया और अन्तत: उत्तरी आयरलैंड स्वतंत्र हो गया।

प्रजातंत्र का विकास :

प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप यूरोप में प्रजातंत्र का भी विकास हुआ। युद्ध के पश्चात् यूरोप के तीन महान राजवंशों यथा रोमनाऊवंश (रूस) हैब्सवर्ग वर्ग (ऑस्ट्रीया) एवं होहेनजोलर्न वंश (प्रशा) का खात्मा हो गया। दूसरी तरफ तुर्की में गणराज्य की स्थापना हुई। उसी तरह जब यूनान तुर्की से पराजित हुआ तो वहाँ भी गणराज्य की स्थापना हुई।

यूरोप में दक्षिणपंथी रूझान एवं अधिनायकवाद का उदय

प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप यूरोपीय देशों में आर्थिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई। सरकारों के उत्तरदायित्व बढ़ गए। फलत: सरकार के अधिकारों में भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई, इसलिए उस समय यूरोपीय देशों में दक्षिणपंथी रूझान देखा जाता है। अर्थात् रूस में बोल्शेविक सरकार स्थापित हुई एवं जर्मनी एवं इटली में क्रमश: नाजीवादी एवं फासीवादी सरकारें स्थापित हुईं।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विश्व परिदृश्य में यूरोप के साथ-साथ एशिया एवं अमेरिका का भी महत्व बढ़ा। प्रथम विश्व युद्ध का स्वाभाविक परिणाम था यूरोप की प्रसिद्ध आर्थिक मंदी जिससे यूरोपीय अर्थव्यवस्था को गहरा धक्का लगा।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् उपनिवेशवाद को भी गहरा धक्का लगा। उपनिवेशों की जनता की इच्छाएँ एवं अपेक्षाएँ जगीं क्योंकि मित्र राष्ट्रों द्वारा प्रजातंत्र एवं आत्मनिर्णय के सिद्धांत पर बल दिया गया था।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद पुरूषों की संख्या कम हो गई। अत: प्रथम बार यूरोपीय

Scanned with CamScanner

राजनीतिक-सामाजिक जीवन में महिलाओं का महत्व बढ़ा। इसके बाद ही Feminist movement की शुरूआत हुई। इसके साथ ही मजदूरों के मताधिकार में भी वृद्धि हुई। अत: यूरोप के राजनीतिक जीवन में श्रमिकों का महत्व बढ़ा।

सबसे बढ़कर यूरोपीय राजनीति में शक्ति संतुलन की अवधारणा गलत अर्थात आलोकप्रिय हो गई एवं उसके बदले अंतर्राष्ट्रीय संगठन पर बल दिया जाने लगा। इसी उद्योग का परिणाम था राष्ट्रसंघ की स्थापना।

Scanned with CamScanner